मुगल काल के दौरान भारत में मध्यम वर्ग की महिलाओं की स्थिति

Ankit Kumar Singh[1]*, Dr Arvind Kumar Verma [2]**
1. Research Scholar,
2. Professor and Head
* Faculty of Social Science (Department of History), Purnea University, Purnia, Bihar, India
** Faculty of Social Science (Department of History), Purnea University, Purnia, Bihar, India
Corresponding Author: Ankit Kumar Singh
Email- ankitsarsi@gmail.Com

सारः इस लेख में भारत में मुगल काल के दौरान महिलाओं के अधिकारों और स्थिति का ऐतिहासिक विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। इसके लिए विभिन्न प्रमुख वेबसाइटों, शोध पत्रों, पत्रिकाओं, पुस्तकों, सरकारी दस्तावेजों आदि से सामग्री एकत्रित की गई है। यह शोध मुख्यतः वर्णनात्मक प्रकृति का है। मध्यकालीन भारत में महिलाओं की स्थिति अत्यंत वंचित थी , जिसका मुख्य कारण पुरुष प्रधान समाज की स्थापना थी। महिलाओं को अपने दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं में अधिकारों का अभाव झेलना पड़ता था। उन्हें अपने विचार व्यक्त करने और स्वतंत्र निर्णय लेने की अनुमति नहीं थी। महिलाएं मुख्यतः घरेलू जिम्मेदारियों तक सीमित थीं। इसके अतिरिक्त, उस समय बहुविवाह, सती प्रथा, बाल विवाह तथा कन्या भ्रूण हत्या जैसी कुप्रथाएं भी व्यापक थीं, जिनके चलते महिलाओं की स्थिति और भी दयनीय हो गई थी। हालांकि, इस्लाम के आगमन के साथ महिलाओं की स्थिति में कुछ सुधार देखने को मिला तथा उन्हें कुछ अधिकार प्रदान किए गए।

[Singh, A.K. and Verma, A.K.. **मुगल काल के दौरान भारत में मध्यम वर्ग की महिलाओं की स्थिति**. *The International Journal of Interpretation, Observation and Analysis*, 2025; Volume 2, Issue 1:28-32 (April-June). ISSN 2349-0713, Peer-reviewed (online/offline), Refereed, Indexed and International Journal (Since 2013), Global Impact Factor: 5.776

Keywords: बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या, इस्लाम, मुगल काल, बहुविवाह, अधिकार, स्थिति, सती, महिलाएं,

परिचयः-

प्राचीन भारत में महिलाओं का समाज में अत्यधिक प्रभाव था। उन्होंने सामाजिक, सांस्कृतिक तथा दार्शनिक मूल्यों और प्रवृत्तियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा समाज में एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया। प्रसिद्ध भारतीय विधि निर्माता मनु के काल से ही हिंदू कानून ने महिलाओं को समाज में एक आश्रित अवश्य माना , परंतु उन्हें किसी भी प्रकार से अपमानजनक दर्जा नहीं दिया।

एक बालिका के रूप में वह अपने माता-पिता के संरक्षण में , एक वयस्क स्त्री के रूप में अपने पति के संरक्षण में और विधवा होने पर अपने पुत्रों के संरक्षण में रहती थी। धार्मिक मामलों में महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे। उन्हें परिवार के कल्याण हेतु सम्मानित किया जाना आवश्यक माना जाता था।पूर्व-मुस्लिम काल में भारत की महिलाएं , यद्यपि सैद्धांतिक और व्यवहारिक रूप में पुरुषों पर निर्भर थीं और संरक्षित थीं , फिर भी उन्हें समाज में एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त था।

भारतीय इतिहासः एक संक्षिप्त कालानुक्रमिक अवलोकनः-

कालानुक्रमिक रूप से भारतीय इतिहास को तीन मुख्य अवधियों में विभाजित किया जा सकता है — प्राचीन भारत, मध्यकालीन भारत और आधुनिक भारत।

प्राचीन भारत का अध्ययन लोगों द्वारा उपयोग किए गए पत्थर और धातु के उपकरणों के आधार पर विभिन्न युगों में विभाजित किया गया है:

- **पुरापाषाण युग** (लगभग 20 लाख ईसा पूर्व – 10,000 ईसा पूर्व)
- **मध्यपाषाण युग** (लगभग 10,000 ईसा पूर्व – 8,000 ईसा पूर्व)
- **नवपाषाण युग** (लगभग 8,000 ईसा पूर्व – 4,000 ईसा पूर्व)
- **ताम्रपाषाण युग** (लगभग 4,000 ईसा पूर्व – 1,500 ईसा पूर्व)

इन युगों के भीतर लौह युग (1500 ईसा पूर्व – 200 ईसा पूर्व) तथा मौर्य साम्राज्य (321 ईसा पूर्व – 185 ईसा पूर्व) भी सम्मिलित हैं।

मध्यकालीन भारत के प्रमुख घटनाक्रमों में त्रिपक्षीय संघर्ष उल्लेखनीय है, जिसमें प्रतिहार, पाल और राष्ट्रकूट वंशों के

बीच (800 ईस्वी – 1200 ईस्वी) सत्ता प्राप्ति के लिए संघर्ष हुआ।

मुगल काल का संक्षिप्त विवरण:-

मुगल साम्राज्य की स्थापना

मुगल साम्राज्य की स्थापना 1526 ईस्वी में हुई थी। बाबर ने पानीपत की पहली लड़ाई में इब्राहिम लोदी को पराजित कर भारत में मुगल शासन की नींव रखी। मुगलों की उत्पत्ति मध्य एशिया में हुई थी और वे मंगोल शासक चंगेज़ खान तथा एशिया के महान विजेता तैमूर (तामरलैन) के वंशज थे।

मुगलों को अपनी वंशावली पर अत्यंत गर्व था, और भारत पर तैमूर के आक्रमणों की स्मृति ने बाबर को भी भारत पर आक्रमण करने हेतु प्रेरित किया।

17वीं शताब्दी के अंत तक , भारतीय उपमहाद्वीप का अधिकांश भाग मुगल साम्राज्य के अधीन एकीकृत हो गया था। मुगल साम्राज्य उस समय वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का लगभग एक-चौथाई उत्पादन कर रहा था और विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था तथा विनिर्माण शक्ति बन गया था।
भारत में मुगल शासन को एक *साम्राज्य* कहा जाता है क्योंकि यह एक विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ था। अपने चरम पर, 1526 से 1707 के बीच , मुगल साम्राज्य ने अधिकांश भारतीय उपमहाद्वीप पर शासन किया , जिसमें आज का भारत , अफगानिस्तान, पाकिस्तान तथा बांग्लादेश के कुछ भाग सम्मिलित थे।

मुगल काल में समाज का स्वरूप :-

मुगल काल में समाज सामंती आधार पर संगठित था और सामाजिक व्यवस्था का प्रमुख सम्राट होता था।

- सम्राट को अद्वितीय और सर्वोच्च दर्जा प्राप्त था तथा वह हर विषय में अंतिम प्राधिकृत था।
- उनके बाद जमींदारों और कुलीन वर्ग का स्थान था।
- देश की अधिकांश नौकरियों पर मुगल रईसों का एकाधिकार था।
- सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से मुगल कुलीन वर्ग ने एक विशेषाधिकार प्राप्त समूह का निर्माण किया था।
- कुलीन वर्ग में विभिन्न जातियों और राष्ट्रीयताओं के लोग सम्मिलित थे। कुल या पारिवारिक संबंध कुलीन वर्ग में प्रवेश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते थे।
- जमींदार अथवा सरदार भी कुलीन वर्ग का हिस्सा थे, जिनके पास अपने निजी सशस्त्र बल होते थे और वे किलों या गढ़ियों में निवास करते थे , जो उनकी प्रतिष्ठा और सुरक्षा का प्रतीक थे।
- व्यापारी और वाणिज्यिक वर्ग भी समाज का एक महत्वपूर्ण भाग थे। उन्होंने परंपरागत नियमों और संपत्ति की सुरक्षा के आधार पर अपने अधिकार सुनिश्चित किए और उच्च जीवन स्तर बनाए रखा।

मुगल काल में महिलाओं की स्थिति और अधिकार :-

मुगल शासन के साथ भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में कई प्रकार के परिवर्तन आए।

- नवविकसित सामाजिक कानूनों और रीति-रिवाजों ने महिलाओं को कई बार मानसिक रूप से हीन भावना से ग्रस्त कर दिया।
- हालांकि, मुगल काल में भारतीय अभिजात वर्ग के बीच एक स्वस्थ परंपरा भी प्रचलित हुई। उदाहरण के लिए, सम्राट हुमायूँ के हरम की महिलाएं स्वतंत्र रूप से पुरुष मित्रों और आगंतुकों से मिलती-जुलती थीं।
- ये महिलाएं कभी-कभी पुरुषों के वस्त्र पहनकर बाहर जाती थीं, पोलो खेलती थीं तथा संगीत एवं अन्य कलाओं में दक्षता प्राप्त करती थीं।
- निचले वर्ग की महिलाओं के जीवन के बारे में अपेक्षाकृत कम जानकारी उपलब्ध है, किंतु संभवतः उनकी स्थिति सामाजिक मानकों के अनुसार सीमित थी।

वैदिक काल के उपरांत पर्दा प्रथा का प्रचलन बढ़ा , हालांकि प्राचीन काल में इसका व्यापक प्रचलन नहीं था।

- मुसलमानों के बीच पर्दा प्रथा उनकी मूल भूमि में सामान्य थी। भारत में तुर्क आक्रमणों के बाद हिंदू महिलाओं ने अपनी रक्षा के लिए पर्दा प्रथा को अपनाया।
- मुगल शासनकाल में भी पर्दा प्रथा व्यापक थी।

दहेज और तलाक :-

- दहेज प्रथा के कारण लड़कियों के जन्म को अवांछित माना जाने लगा। सुंदर और समृद्ध दहेज के बिना लड़कियों का विवाह करना कठिन हो गया था।
- अबुल फज़ल लिखते हैं कि सम्राट अकबर ने उच्च दहेज की प्रथा को अस्वीकार कर दिया था। अकबर का मानना था कि अधिक दहेज तलाक के मामलों को रोकने में सहायक हो सकता है।
- ब्राह्मणों के संदर्भ में अबुल फज़ल उल्लेख करते हैं कि उनके यहां दहेज का विशेष उल्लेख नहीं था और तलाक की कोई प्रथा नहीं थी।

- मुस्लिम कानूनों और रीति-रिवाजों में सशर्त तलाक की अनुमति थी, जबकि हिंदू समाज में विवाह एक पवित्र संस्कार माना जाता था और तलाक का कोई स्थान नहीं था।
- इस प्रकार, मुस्लिम महिलाओं को तलाक और पुनर्विवाह की अनुमति थी, जिससे उन्हें अपने हिंदू समकक्षों की तुलना में अधिक सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त थी।

मुगल काल में बहुविवाह प्रथा :-

मुगल काल में भारत में बहुविवाह प्रथा हिंदू और मुस्लिम, दोनों समुदायों के बीच प्रचलित थी, विशेषतः समाज के संपन्न वर्गों में। एक पुरुष की प्रतिष्ठा उसके हरम में अनेक पत्नियों की उपस्थिति से बढ़ती थी, किन्तु इसका महिलाओं की स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता था। बहुपत्नीत्व की स्थिति में, महिलाओं को अपने पति की कृपा प्राप्त करने के लिए अन्य पत्नियों के साथ संघर्ष करना पड़ता था। उन्हें अक्सर भोग की वस्तु के रूप में देखा जाता था, जिससे उनका आत्मसम्मान आहत होता था।

मुस्लिम कानून के अनुसार, कुछ शर्तों के अंतर्गत, एक पुरुष को एक समय में चार पत्नियाँ रखने की अनुमति थी। यद्यपि सम्राट अकबर एकविवाह के समर्थक थे, फिर भी उन्होंने स्वयं बिना किसी को तलाक दिए लगभग 300 पत्नियों से विवाह कर अपने ही आदर्श का उल्लंघन किया।

सामान्यतः किसी बहुविवाही मुस्लिम परिवार में पहली पत्नी, जो प्रथम विवाह से संबंधित होती थी, को सर्वाधिक सम्मान प्राप्त होता था और उसे 'हराम-ए-मुहतरम' (सम्मानित हरम) कहा जाता था। वह घरेलू मामलों का प्रबंधन संभालती थी तथा अन्य पत्नियों पर नियंत्रण रखती थी। यद्यपि अन्य पत्नियाँ भी पति की कृपा प्राप्त करने का भरसक प्रयास करती थीं और अक्सर उसकी प्रिय बनने के लिए प्रयासरत रहती थीं।

मुगल काल में हिंदुस्तान के मुस्लिम समुदाय को बहुविवाह की बुराइयों से सर्वाधिक नुकसान उठाना पड़ा था।

मुगल काल में वेश्यावृत्ति और नृत्यांगनाओं की भूमिका :-

वेश्यावृत्ति को उस समय एक आवश्यक सामाजिक बुराई के रूप में स्वीकार किया जाता था। महिलाओं को अक्सर विशेष अवसरों पर, जैसे दावतों, त्योहारों और विवाह समारोहों में, नर्तकियों और गायिकाओं के रूप में नियुक्त किया जाता था।

इनमें से कई महिलाएं अत्यंत कुशल थीं और संगीत, कविता, जादू-टोना तथा जासूसी जैसी विविध कलाओं एवं क्षमताओं में निपुणता रखती थीं।

ये नृत्यांगनाएं अपने मोहक नृत्य और गीतों के माध्यम से सम्राटों और रईसों के हरम में कैद महिलाओं को मनोरंजन तथा सुखद अवकाश प्रदान करती थीं। समाज में नैतिक शिथिलता के प्रसार के लिए, इन सार्वजनिक महिलाओं को काफी हद तक उत्तरदायी माना जा सकता है।

मुगल काल में हिंदू विधवाओं की स्थिति: -

हिंदुओं में पति की मृत्यु को एक महिला के जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी माना जाता था। मुगल काल में, कुछ निम्न वर्गों को छोड़कर, हिंदुओं के बीच विधवा विवाह को स्वीकार नहीं किया जाता था। पति की मृत्यु के बाद, महिलाओं से अपेक्षा की जाती थी कि वे स्वयं को पति के साथ चिता में समर्पित कर दें — या तो प्रेमवश, या पारिवारिक सम्मान की रक्षा हेतु, अथवा दामाद के सामने शर्मिंदगी से बचने के लिए।

जो विधवाएँ सती नहीं होती थीं, उनके साथ समाज कठोर व्यवहार करता था। उनके सिर का मुंडन कर दिया जाता था, उन्हें लंबे बाल रखने या गहने पहनने की अनुमति नहीं थी। समाज उन्हें पिछला जन्म का पापी समझकर अपमानित करता था। गर्भवती महिलाओं को प्रसव के बाद सती होने के लिए बाध्य नहीं किया जाता था। यदि किसी पुरुष की यात्रा के दौरान मृत्यु हो जाती थी, तो उसकी पत्नियाँ उसके वस्त्रों या अन्य वस्तुओं को धारण कर लेती थीं।

ब्राह्मण, क्षत्रिय और बनिया समुदाय की महिलाएँ प्रायः सती प्रथा का पालन करती थीं। मुगलों के आगमन से पहले भी यह प्रथा प्रचलित थी। अकबर जैसे सम्राटों ने सती प्रथा को रोकने या कम करने का प्रयास किया और विधवाओं को उनकी इच्छा के विरुद्ध सती किए जाने से बचाने के आदेश जारी किए। फिर भी, यह प्रथा पूरी तरह समाप्त नहीं हो सकी और बाद के समय में भी जारी रही।

जौहर प्रथा: -

सती की भाँति, जौहर भी मुख्यतः राजपूत महिलाओं, विशेष रूप से राजपूताना क्षेत्र की महिलाओं द्वारा किया जाता था। जब किसी शत्रु द्वारा गाँव या किले पर कब्जा कर लिया जाता था, तो महिलाओं की आबरू पर संकट आ जाता था। इससे बचने के लिए महिलाएँ स्वयं को आग के हवाले कर देती थीं।

राजपूत योद्धा जब अपनी हार निश्चित समझते थे, तो पहले वे अपनी स्त्रियों और बच्चों को मारकर या एकत्र कर अग्नि में समर्पित कर देते थे, फिर स्वयं युद्धभूमि में वीरगति को प्राप्त होते थे। जौहर का मुख्य उद्देश्य महिलाओं के सम्मान की रक्षा करना था। यह परंपरा प्रायः राजपूतों तक सीमित रही।

मुगल काल में महिलाओं का संपत्ति अधिकार: -

मुगल काल में महिलाओं को संपत्ति के रूप में मेहर, उपहार

और विरासत के माध्यम से चल एवं अचल संपत्ति में अधिकार प्राप्त था। मुस्लिम महिलाओं को हिंदू महिलाओं की तुलना में बेहतर अधिकार प्राप्त थे। इस्लामिक कानून के अनुसार , बेटी को भी संपत्ति में अधिकार मिलता था , हालांकि पुत्र के हिस्से का आधा।

हिंदू समाज में केवल अविवाहित बेटियों को ही पिता की संपत्ति का एक सीमित हिस्सा प्राप्त होता था , जो सामान्यतः उनके विवाह और दहेज के खर्च में उपयोग होता था। इसके पश्चात् उनका अधिकार समाप्त हो जाता था।

शाही महिलाओं को उनके नियमित भत्तों के अतिरिक्त सम्राट द्वारा दी गई विशाल जागीरें और विशेष उपहार भी प्राप्त होते थे। गुलबदन बेगम उल्लेख करती हैं कि पानीपत के युद्ध में बाबर की विजय के बाद, उन्होंने अपने हरम और परिवार की महिलाओं के लिए हिंदुस्तान से बहुमूल्य उपहार भिजवाए थे।

महिला शिक्षा: -

मुगल काल के पुरुष प्रधान समाज में महिला शिक्षा को विशेष महत्व नहीं दिया जाता था। हिंदू और मुसलमान दोनों समुदायों में महिलाओं की शिक्षा उपेक्षित थी। अधिकांश समाज शिक्षा को अनावश्यक या हानिकारक मानता था।

फिर भी, कुछ वर्गों में महिलाओं के बौद्धिक विकास की चिंता की जाती थी। पर्दा प्रथा और एकांत जैसी बाधाओं ने महिलाओं की शिक्षा को विशेष रूप से प्रभावित किया। महिलाओं को विद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों तक पहुँचने का अवसर बहुत कम मिलता था।

मुगल काल में स्त्री दासता: -

मुगल भारत में स्त्री दासता की परंपरा पूर्वकाल से जारी रही। भारत की गुलाम लड़कियों के अतिरिक्त, चीन और तुर्किस्तान से भी महिला दासों का आयात किया जाता था। दासता मुख्यतः विद्रोहग्रस्त क्षेत्रों में सशस्त्र संघर्ष और माता-पिता द्वारा बच्चों की बिक्री के माध्यम से होती थी।

महिला दास दो प्रकार की होती थीं — एक जो स्वामी के मनोरंजन हेतु होती थीं और दूसरी जो घरेलू कार्यों में सहायता करती थीं। हरम की महिलाओं की देखरेख के लिए विशेष दासियों को नियुक्त किया जाता था , जिन्हें प्रायः बचपन में ही लाया जाता था और नपुंसक बना दिया जाता था।

गुलबदन बेगम बताती हैं कि महाम बेगम , हुमायूँ के लिए सुंदर और गुणी दासियाँ प्रस्तुत करती थीं। यदि स्वामी को पसंद आता, तो वह दासी को अपनी सेवा में रख लेता या उससे विवाह भी कर सकता था। इसके अतिरिक्त , स्त्रियाँ निर्माण कार्यों जैसे पत्थर तोड़ने , गारा बनाने और ईंटें ढोने जैसे कठिन कार्यों में भी संलग्न रहती थीं।

निष्कर्ष :-

मध्यकालीन भारत में महिलाओं का समाज पर गहरा प्रभाव था। उन्होंने सामाजिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक मूल्यों तथा प्रवृत्तियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और समाज में एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया। भारत में मुगलों के आगमन के बाद महिलाओं की स्थिति में कुछ परिवर्तन आया। मुगल काल में महिलाओं के सामाजिक , आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन के साथ-साथ शाही महिलाओं की स्थिति पर विशेष ध्यान दिया गया। मुगल भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और उनकी स्थिति , उनके रक्त संबंधों के बजाय , उनकी व्यक्तिगत योग्यता और क्षमता पर आधारित थी। उदाहरणस्वरूप , महाम अनागा ने हरम और स्वयं अकबर पर गहरा प्रभाव डाला तथा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।समकालीन राजनीति में शासक वर्ग की महिलाओं के योगदान और हस्तक्षेप से यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं का समाज में महत्वपूर्ण स्थान था। वरिष्ठ मुगल महिलाओं को शांति स्थापना के प्रयासों में केंद्रीय भूमिका निभाते हुए दर्ज किया गया है। कुछ अवसरों पर उन्हें शासन का कार्यभार भी सौंपा गया।

मुस्लिम महिलाओं और मुगल हरम की महिलाओं के अलावा , हिंदू महिलाओं ने भी मुगल भारत के राजनीतिक इतिहास में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। कभी-कभी महिलाएँ राज्य का वास्तविक नियंत्रण संभालती थीं और उनके अधीन एक संगठित तथा शक्तिशाली सेना भी होती थी।

इन तथ्यों से स्पष्ट होता है कि मुगल भारत में कुछ अवसरों पर महिलाओं ने उच्च सत्ता और प्रतिष्ठा प्राप्त की थी।

संदर्भः-

1. अन्सारी, मुहम्मद अज़हरः 'महान मुगलों का हरम ', आगरा, जनवरी, 1960

2. अन्सारी, मो. अज़हरः मुगलों के अधीन यूरोपीय यात्री , 1580-1627, इदारा-ए-अदाबियत-ए-डेली, दिल्ली, 1975-83

3. चोपड़ा, P.N: मुगल युग में समाज और संस्कृति के कुछ पहलू

4. कर्नल, जेम्स टॉडः द एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान, वॉल्यूम। II.

5. एडवर्ड, एस. होल्डनः हिंदुस्तान के मुगल सम्राट A.D. 1398-1707, दिल्ली

6. हुसैन, यूसुफः मध्यकालीन भारतीय संस्कृति की झलकियाँ

7. कंवर, मो। अशरफ़ः हिंदुस्तान के लोगों का जीवन और

परिस्थितियाँ

8. मजूमदार, आर. सी.: द हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ द इंडियन पीपलः द मुगल एम्पायर , बॉम्बे, 1974

9. रे चौधरी, S.C.: सोशल कल्चरल एंड इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया , सुरजीत पब्लिकेशन 3rd एडिशन 1997, दिल्ली

10. सरकार जे. एन.: स्टडीज इन मुगल इंडिया , दिल्ली

11. शमीम, अम्ब्रिमः 16वीं शताब्दी के दौरान मुगल साम्राज्य में महिलाओं की स्थिति , अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, 2010

12. श्रीवास्तव, ए. एल.: मध्यकालीन भारतीय संस्कृति , शैक्षिक प्रकाशक , आगरा, 1997

13. वेंकटेश्वरः 14 साल की उम्र तक भारतीय संस्कृति। वेबसाइटः Sodhganga.inflibnet.ac.in, https://www.google.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERPRETATION OBSERVATION & ANALYSIS